हिंदी (लोकभारती)

अभ्यास के लिए कृतिपत्रिका 5 के उत्तर

प्र. 1. (अ)

(1)

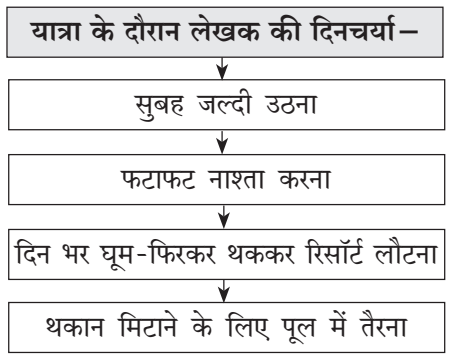

(2)

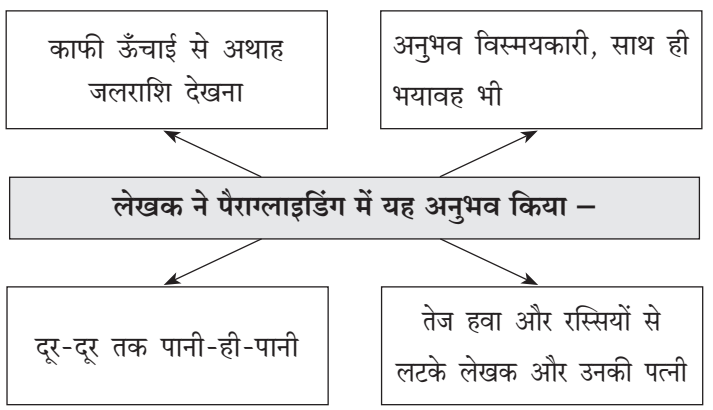

(3)

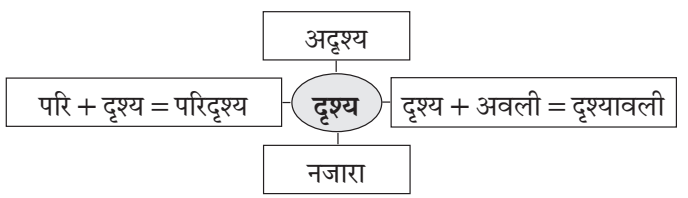

(4) सुरम्य सागरतट पर बसा गोवा प्रांत अपनी प्राकृतिक सुंदरता और अनूठी संस्कृति के लिए प्रसिद्ध है। यहाँ की संस्कृति काफी प्राचीन है। आजादी से पहले गोवा पुर्तगाल और फ्रांस का उपनिवेश था। इस वजह से आज भी यहाँ के रहन-सहन, खान-पान पर पश्चिमी संस्कृति का पूरा प्रभाव दिखाई देता है। यहाँ लगभग ८० प्रतिशत लोग ईसाई हैं। गोवा की एक खास बात यह है कि यहाँ के ईसाई समाज में भी हिंदुओं जैसी जाति व्यवस्था पाई जाती है। दक्षिण गोवा में ईसाई समाज का प्रभाव अधिक है, लेकिन वहाँ के वास्तुशास्त्र में हिंदू प्रभाव दिखाई देता है। गोवा में अत्यंत प्राचीन मंदिर पाए जाते हैं, जबकि उत्तर गोवा में पुर्तगाली वास्तुकला के नमूने ज्यादा दृष्टिगोचर होते हैं।

प्र. 1. (आ)

(1) (i)

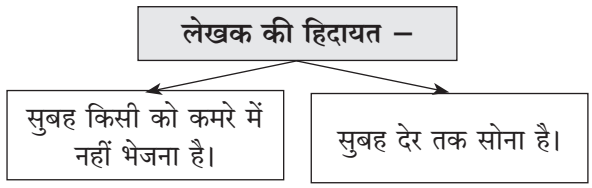

(ii)

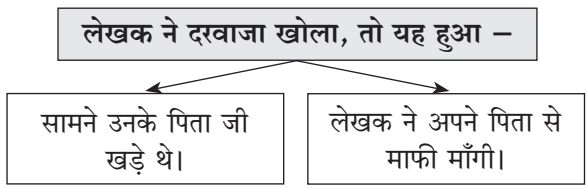

(2) (i)

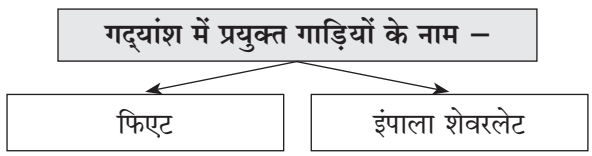

(ii) (1) सुबह साढ़े पाँच-पौने छह बजे दरवाजा खटखटाने का – नींद टूटना और बड़ी तेज आवाज में बोलना।

(2) दरवाजे पर दुबारा दस्तक देने का – झुँझलाना और जोर से बिगड़ने के मूड में बड़बड़ाना।

(3) (i) दुख × सुख (ii) बुरा × भला

(iii) प्रसन्न × अप्रसन्न (iv) सदुपयोग × दुरुपयोग।

(4) संसार में दो प्रकार के मनुष्य होते हैं। एक वे, जो भौतिक सुखों को ही अपने जीवन का उद्देश्य मानते हैं। इनके लिए किसी भी तरह धन-दौलत तथा सुख-सुविधा की वस्तुएँ प्राप्त करना अनुचित नहीं होता। दूसरे प्रकार के मनुष्य हर स्थिति में अपने आप को संतुष्ट रखते हैं। ये अपने सीमित साधनों से अपना और अपने परिवार का निर्वाह करते हैं और प्रसन्न रहते हैं। इनका रहन-सहन साधारण ढंग का होता है। विलासितापूर्ण वस्तुएँ इन्हें प्रभावित नहीं कर पातीं। वे केवल जीवनावश्यक वस्तुओं से अपना गुजारा कर लेते हैं, पर ईमानदारी, सच्चरित्रता, सच्चाई, सरलता तथा दूसरों के प्रति सहानुभूति रखना वे अपने जीवन का आदर्श मानते हैं। हमारे देश के संतों, महात्माओं तथा महापुरुषों का जीवन इसी तरह का रहा है। इन महापुरुषों को जनता आज भी याद करती है और उनका गुणगान करती है। सादा जीवन उच्च विचार को हर युग में हमारे यहाँ मान्यता मिली है और इन्हें अपने जीवन का मूलमंत्र मानकर ही मनुष्य सुखी रह सकता है।

प्र. 1. (इ)

(1) (i)

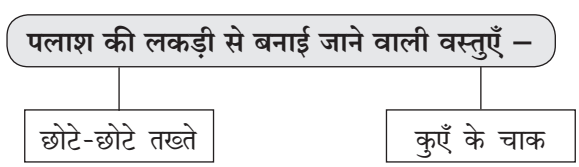

(ii) (1) बबूल (2) पलाश।

(2) होली भारतवर्ष के प्रमुख त्योहारों में एक है। रंगों का त्योहार होली, जिसका इंतजार बच्चों, बूढ़ों और युवाओं को महीनों पहले से होने लगता है, आज अपना स्वरूप बदल रहा है। बदलते परिवेश में होली का नजारा भी विकृत होता जा रहा है। एक समय था, जब होली के दिनों में चारों ओर अबीर-गुलाल उड़ते दिखाई देते थे। पलाश (टेसू) के फूलों से निर्मित रंग एक-दूसरे के ऊपर डाला जाता था। इस रंग में अनेक औषधीय गुण होते हैं, जो वसंत ऋतु में होने वाले त्वचा संबंधी रोगों से हमें बचाते थे। परंतु आज उनका स्थान कीचड़, गंदगी और रासायनिक रंगों ने ले लिया है। इन रसायनयुक्त रंगों के उपयोग से त्वचा संबंधी अनेक बीमारियाँ हो जाती हैं। रंग लगे हुए स्थानों पर खुजली व लाल दाने हो जाते हैं। यह रंग यदि आँखों में गिर जाए तो बहुत हानिकारक साबित होता है। आँखों की रोशनी तक समाप्त हो सकती है। रंग लगाने वालों की तो एक-दो मिनट की मस्ती होती है, परंतु रासायनिक रंगों के शिकार को न जाने कितने दिनों तक परेशानी भुगतनी पड़ जाती है। अत: हम सभी को होली खेलते समय इन रासायनिक रंगों के प्रयोग से बचना चाहिए।

प्र. 2. (अ)

(1)

कवि के अनुसार ऐसे दिखो –

- (1) नींव के अंदर
- (2) मील का पत्थर
- (3) आदमी बनकर
- (4) आईना बनकर

(2)

(i) शिखर – स्वर्णिम

(ii) आस्मान – गर्द

(iii) पत्थर – मील

(iv) शक्ल – जिंदगी

(3) किसी भी अट्टालिका के चमचमाते शिखरों को सभी देखते हैं। उनकी शान की प्रशंसा भी करते हैं। लोग समाज में इन शिखरों के समान ही सम्मान पाना चाहते हैं। परंतु वास्तव में देखा जाए तो इन शिखरों से अधिक महत्त्व है उन ईंटों और पत्थरों का, जिनके कारण ये शिखर बन सके। यदि नींव की ईंटों ने गुमनामी के अंधेरे में रहना स्वीकार न किया होता, तो इन शिखरों का अस्तित्व ही न होता। यदि हम समाज के लिए कुछ करना चाहते हैं, तो हमें नींव की ईंटों के समान कुछ अच्छा और सुदृढ़ काम करना चाहिए।

यदि आप मंजिल की ओर अग्रेसर हैं तो अपने अच्छे कर्मों के कारण उसी प्रकार आसमानों तक छा जाइए, जैसे आँधी आने पर पृथ्वी से आकाश तक धूल-ही-धूल दृष्टिगोचर होती है। अर्थात आपके द्‌वारा किए गए अच्छे कामों का प्रभाव और चर्चा हर तरफ हो। और यदि आप मंजिल की ओर बढ़ते हुए मार्ग में कहीं बैठ जाते हैं तो आप किसी पथिक को उसकी मंजिल की ओर बढ़ते समय सहायता करने वाले मील के पत्थर के समान बनें।

प्र. 2. (आ)

(1)

(i) रात के अंधकार में जुगनू – घमंडियों के समाज से

(ii) ससि (अनाज) से भरपूर धरती – उपकारी की संपति से।

(iii) कृषि को निराने वाले किसान – मोह-मद-मान त्यागने वाले विद्‌वान से।

(iv) दिखाई न देने वाला चक्रवाक – कलियुग पाकर भाग जाने वाले धर्म से

(2) (i) ग्रह – महि

(ii) पेड़ – बिटप

(iii) पत्ते – पात

(iv) उपग्रह – ससि

(3) कभी-कभी वायु बहुत तेज गति से चलने लगती है। इससे बादल यहाँ-वहाँ गायब हो जाते हैं। यह दृश्य उसी प्रकार लगता है जैसे परिवार में कुपुत्र के उत्पन्न होने से कुल के उत्तम धर्म (श्रेष्ठ आचरण) नष्ट हो जाते हैं।

कभी (बादलों के कारण) दिन में घोर अंधकार छा जाता है और कभी सूर्य प्रकट हो जाता है। तब लगता है, जैसे बुरी संगति पाकर ज्ञान नष्ट हो गया हो और अच्छी संगति पाकर ज्ञान उत्पन्न हो गया हो।

प्र. 3. (अ)

(1) (i) बूढ़ी काकी के नेत्र, हाथ, पैर आदि सभी अंग जवाब दे चुके थे।

(ii) उनका भतीजा बुद्‌धिराम।

(iii) खूब लंबे-चौड़े वादे करके।

(iv) बूढ़ी काकी गला-फाड़कर रोती थीं।

(2) कहते हैं, बुढ़ापा बचपन का ही एक रूप है। वृद्‌धावस्था में मनुष्य की हरकतें बच्चों जैसी हो जाती हैं। इस अवस्था में मनुष्य के अंग-प्रत्यंग कमजोर हो जाते हैं और उन्हें बच्चों की तरह दूसरों का सहारा लेना पड़ता है। दिमाग कमजोर हो जाता है। दाँत गिर जाते हैं और मनुष्य का मुँह नन्हे बच्चों की तरह पोपला (बिना दाँत का) हो जाता है। इतना ही नहीं, बच्चों की तरह ही वृद्‌धों को भी मान-अपमान की परवाह नहीं होती। जिस तरह लोग बच्चों की बातों पर ध्यान नहीं देते, उसी तरह वृद्‌धों की बातों पर भी कोई ध्यान नहीं देता। उनकी इच्छा-अनिच्छा का भी कोई महत्त्व नहीं होता। इस तरह वृद्‌धावस्था और बचपन की अधिकांश बातों में समानता होती है। इसलिए कहा जा सकता है कि बुढ़ापा बहुधा बचपन का पुनरागमन होता है।

प्र. 3. (आ)

(1) (i)

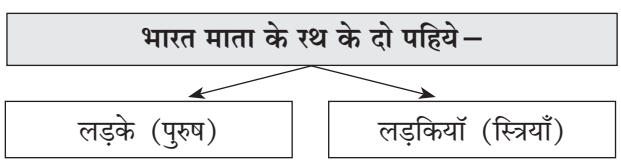

(ii)

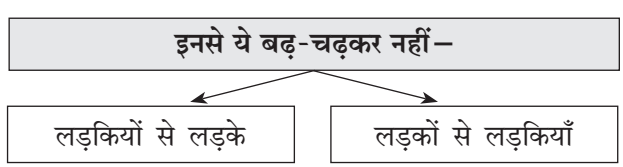

(2) किसी बात पर होने वाली कहा-सुनी या विवाद को आमतौर पर झगड़ा कहा जाता है। झगड़े से समस्या सुलझने के बजाय और उलझ जाती है। मुख्य मुद्दा धरा रह जाता है और झगड़ा प्रमुख हो जाता है। कभी-कभी तो झगड़े में लोगों की जान पर भी बन आती है। इसके परिणामस्वरूप लोगों में मारा-मारी और हत्या तक हो जाती है। पर समस्या वैसी की वैसी बनी रहती है, बल्कि उसमें और इजाफा हो जाता है। झगड़े के परिणामस्वरूप पीढ़ी-पीढ़ी तक दुश्मनी बनी रहती है। इसलिए झगड़े को भूलकर आपस में बातचीत के माध्यम से ही किसी समस्या का हल निकालने की बात सोचनी चाहिए। अत: किसी समस्या का हल निकालने का सही मार्ग झगड़ा नहीं, बल्कि शांतिपूर्ण माहौल में आपस में बातचीत कर समझौता करना है।

प्र. 4.

(1) सूखा – गुणवाचक विशेषण।

(2) (i) यंत्र से कुछ चीजें बनती हैं, पर यंत्र भी श्रम से बनते हैं।

(ii) कोरोना का टीका लगवाने वालों की बहुत भीड़ थी।

(3)

संधि शब्द	संधि-विच्छेद	संधि-भेद
स्वागत	**सु + आगत**	**स्वर संधि**

अथवा

यद्यपि	यदि + अपि	**स्वर संधि**

(4)

सहायक क्रिया	मूल क्रिया
(i) सकेंगे	सकना
(ii) गए	जाना

(5)

क्रिया	प्रथम प्रेरणार्थक रूप	द्वितीय प्रेरणार्थक रूप
(i) जागना	जगाना	जगवाना
(ii) भूनना	भुनाना	भुनवाना

(6) (i) निजात पाना।

अर्थ : मुक्त होना।

वाक्य : आखिरकार लंबे अरसे बाद सेठ जी लेन-देन के मुकदमे से निजात पा गए।

(ii) गला फाड़ना।

अर्थ : ऊँची आवाज में बोलना।

वाक्य : बेटे ने पिता से कहा, ''मैं आपकी बात सुन रहा हूँ, आप नाहक गला फाड़ रहे हैं।''

अथवा

- मुहावरा : सिर माथे पर लेना

मुंशी जी सेठ जी का आदेश सदा सिर माथे पर लेते हैं।

(7)

कारक चिह्न	कारक भेद
(i) तकिए से	अपादान कारक
(ii) कुश से	करण कारक

(8) दूसरों को सुनना चाहिए; दूसरों से बहस से केवल झगड़ा हाथ लगता है।

(9) (i) मनुष्य को ज्ञान प्राप्त होने पर इंद्रियाँ शिथिल हो गई हैं।

(ii) जिनके पास संपत्ति है, वे आराम से रहेंगे।

(iii) अधिकारियों को गुस्सा आ रहा था।

(10) (i) मिश्र वाक्य।

(ii) (1) तुम लॉग बुक रखो।

(2) अर्थ तो मेरी कविताओं में आपको मिलेगा।

(11) (i) आचार्य अपने शिष्यों से मिलना चाहते थे।

(ii) करामत अली की आँखों में आँसू उतर आए।

(iii) बचपन का वह दिन याद आता है।

प्र. 5. (अ), (आ) तथा (इ)

उपयोजित लेखन की कृतियों के स्व-मूल्यमापन संबंधी

उपयोजित लेखन के प्रश्नों को हल करते हुए विद्यार्थियों को अपने विचार, अपनी भाषा में लिखने होते हैं। ये प्रश्न मुक्तोत्तरी प्रकार के प्रश्न हैं। इनके उत्तर विद्यार्थी स्वयं लिखें।

नमूना कृतिपत्रिका में दिए गए ऐसे प्रश्नों के उत्तर अंक योजना को ध्यान में रखते हुए विद्यार्थी स्वयं चेक करें और अपने द्वारा लिखे गए उत्तरों को जाँचें। आवश्यकता हो तो विद्यार्थी अपने विषय-शिक्षक की सहायता लें।

उपयोजित लेखन के अधिक अभ्यास हेतु '**नवनीत हिंदी (LL) उपयोजित लेखन : कक्षा दसवीं**' में दिए गए उपयोजित लेखन के नमूनों का अध्ययन अवश्य करें।

❀❀❀